

International Multidisciplinary
Research Journal

*Indian Streams
Research Journal*

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty

Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari

Professor and Researcher ,

Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera

Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Mohammad Hailat

Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Hasan Baktir

English Language and Literature Department, Kayseri

Janaki Sinnasamy

Librarian, University of Malaya

Abdullah Sabbagh

Engineering Studies, Sydney

Ghayoor Abbas Chotana

Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Romona Mihaila

Spiru Haret University, Romania

Ecaterina Patrascu

Spiru Haret University, Bucharest

Anna Maria Constantinovici

AL. I. Cuza University, Romania

Delia Serbescu

Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Loredana Bosca

Spiru Haret University, Romania

Ilie Pinteau,

Spiru Haret University, Romania

Anurag Misra

DBS College, Kanpur

Fabricio Moraes de Almeida

Federal University of Rondonia, Brazil

Xiaohua Yang

PhD, USA

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea, Romania

George - Calin SERITAN

Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade

ASP College Devrukh, Ratnagiri, MS India

Iresh Swami

Ex - VC. Solapur University, Solapur

Rajendra Shendge

Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Patil

Head Geology Department Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude

Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

R. R. Yalikal

Director Management Institute, Solapur

Rama Bhosale

Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Narendra Kadu

Jt. Director Higher Education, Pune

Umesh Rajderkar

Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

Salve R. N.

Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

K. M. Bhandarkar

Praful Patel College of Education, Gondia

S. R. Pandya

Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Govind P. Shinde

Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

G. P. Patankar

S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Alka Darshan Shrivastava

Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Chakane Sanjay Dnyaneshwar

Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Maj. S. Bakhtiar Choudhary

Director, Hyderabad AP India.

Rahul Shriram Sudke

Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

Awadhesh Kumar Shirotiya

Secretary, Play India Play, Meerut (U.P.)

S. Parvathi Devi

Ph.D.-University of Allahabad

S. KANNAN

Annamalai University, TN

Sonal Singh,

Vikram University, Ujjain

Satish Kumar Kalhotra

Maulana Azad National Urdu University



आनन्दरामायण के भगवन्नामों का तात्विक विश्लेषण

डॉ. पुष्पा देवी , डॉ. सुमन मिश्रा

¹असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, मनुलाल महाविद्यालय, औरैया उ.प्र.
²रीडर एवं विभागाध्यक्षा संस्कृत विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव नगर निगम, महाविद्यालय,
हर्ष नगर, कानपुर.

1. भगवन्नामों का प्रयोजन एवं अवधारणा:

संसार की प्रत्येक वस्तु का कोई प्रयोजन अवश्य होता है। आनुषंगिक लक्ष्य तो अनेक होते हैं, किन्तु प्रमुख लक्षण एक ही होता है। संस्कृत जगत का प्रख्यात उक्ति है:-

“प्रयोजनमनुशिय न मन्दोऽपि प्रवर्तते।”

(अर्थात् प्रयोजन के बिना संसार में मूर्ख व्यक्ति भी किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता है) प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में आनन्दरामायणगत भगवन्नामों का तात्विक विवेचन एवं विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रमुख प्रयोजन है और साथ ही साथ परमार्थिक पारलौकिक लाभ प्राप्त करना भी प्रयोजन है। उदाहरण के लिये अजामिल के द्वारा सत्संग से प्राप्त नारायण (भगवान का) नाम अपने पुत्र का रखने के फलस्वरूप अन्त (मृत्यु के समय) में उस (पुत्र) का बुलाने के कारण भगवन्नामोच्चारणमात्र से परमनिः श्रेयस अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति का सांसारिक जनों को बोध कराना ही प्रस्तुत शोध ग्रन्थ का मुख्य प्रयोजन है। इसके साथ ही भगवन्नामस्मरण से ज्ञानरूपी प्रकाश प्राप्त कर अज्ञानरूपी अन्धकार का विनाश, सांसारिक जीवन की परिपक्वता, भवरोग- निवारण, जागतिक गमनागमन से अवमोचन, अहंकारविगलन, विनम्रता की प्राप्ति तथा लोकोत्तर रसधान को सहज उपलब्धि इस शोध प्रबन्ध का आनुषंगिक प्रयोजन है।

2. यह सम्पूर्ण संसार व्यवहार पर आधारित है। व्यवहार ही सिद्धान्त को पोषक होते हैं। नामरूपतामक जगत में नाम का महत्व सर्वोपरि है। नाम के आधार पर ही संसार का समस्त व्यवहार सिद्ध होता है। वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्तते “इस सूक्ति के अनुसार वाणी के द्वारा लोकयात्रा सम्पन्न होती है। यह वाणी नाम की शब्दात्मिका शक्ति ही तो है। इसके बिना लोकयात्रा सम्भव नहीं अतएव इसका विशेष महत्व है।

संस्कृत जगत के अप्रतिम ग्रन्थरत्न व्याकरण की “सिद्धान्तकोमुदी” में भी सर्वप्रथम संज्ञाप्रकरण को ही रखा गया है। किसी भी भाषा के व्याकरण में सर्वप्रथम अध्येता को संज्ञा (नाम) का अवबोध कराना ग्रन्थकार को अभीष्ट होता है। संज्ञा के पश्चात् “सर्वनाम” शब्द आता है। भागवत में सर्वात्म शब्द भगवान के लिये प्रयुक्त है। जैसा कि ‘स सर्वनामः’ से स्पष्ट है। भगवन्नामों के आधार पर संसार में लोग अपने पुत्रों, संस्थाओं तथा विविध प्रतिष्ठानों के नाम रख रहे हैं। यथा- रामचन्द्र, श्रीराम, वासुदेव, विष्णुनारायण, श्रीकृष्ण, दामोदर, माधव आदि। प्राच्यकाल से प्रारम्भ हुई भगवन्नामाधारित नामकरण की यह परम्परा आज तक लगातार चली आ रही है। अजामिल के द्वारा अपने पुत्र का नारायण नाम रखना इस

व्यवहार जगत का विशिष्ट उदाहरण है। भारतीय नारियों के नाम भी कमला, राधा, दुर्गा, उमा, गौरी, पद्मा, इन्दिरा, शिवा, अपर्णा, पार्वती, शची आदि प्रसिद्ध हैं। इस प्रकार में कहीं नाम से व्यवहार होता है तो कहीं व्यवहार से नाम उत्पन्न होते हैं। जैसे गजेन्द्र का उद्धार करने से भगवान का गजोद्धार (तद्भव गजोधर) नाम, वन्य पुष्पों की माला धारण करने के कारण वनमाली (तदीव बनवारी) नाम, रसलीला करने से रासबिहारी चीरहरणलीला करने से गोपीवस्त्रापहारक आदि नाम पड़े। अतः सुस्पष्ट ही है कि भगवन्नामों का व्यवहार जगत में सर्वाधिक तथा आधारमूलक स्थान है। व्यवहार में इनका प्रायः प्रयोग हो रहा है।

भगवन्नाम के प्रकार –

वैविध्य संसार का एक वैशिष्ट्य है। अतः नामरूपतामक जगत में भगवन्नामों में देश, काल तथा परिस्थिति के अनुसार वैविध्य या नानात्व का होना सर्वथा स्वभाविक ही है। “स सर्वनामः स च विश्वरूपः (अर्थात् संसार में जितने भी नाम तथा रूप हैं, वे सब उसी परमेश्वर, प्रभु के

हैं) के अनुसार सभी भगवन्नामों का प्रकारिक वर्गीकरण करना सम्भव नहीं है। अतः प्रस्तुत शोधलेख में स्थूलदृष्ट्या निम्नांकित वर्गीकरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

3. तत्वात्मक भगवन्नाम (क) लीलापरक (ख) प्रतीकात्मक भगवन्नाम
4. तथ्यात्मक भगवन्नाम (क) लीलापरक भगवन्नाम (ख) गुणपरक भगवन्नाम। गुणपरक भगवन्नाम के दो भेद हैं- (अ) स्वरूपगत (ख) स्वभावगत। गतिपय विद्वानों ने भगवन्नामों के (क) वर्णात्मक तथा (ख) ध्वन्यात्मक संज्ञाक दो ही भेद माने हैं, जोकि स्तुत उपर्युक्त तत्वात्मक एवं तथ्यात्मक भगवन्नामों में ही संज्ञान्तर से समाहित है।

4. भगवन्नाम का तत्वात्मक विश्लेषण

इस नामरूपतामक जगत में भगवन्नाम ही तत्त्व है, शेष सभी वस्तुएं असार हैं। यहाँ तत्त्व का अर्थ है भगवान की ही सत्ता, महत्ता एवं भगवत्ता का सर्वत्र बोध होना, जैसा कि तत्त्व शब्द की व्युत्पत्ति-



‘तदिति परोक्षे विजानीनात् ‘परोक्षं न प्रकाशते, तथ्य (परोक्षस्य बुद्धानो भगवतो वा) भावस्तत्त्वम् (टार्तात तत् शब्द का परोक्ष अर्थ जानना चाहिये तथा परोक्ष दिखाई नहीं पड़ता है, उस परोक्ष ब्रम्ह या गीगवान का भाव सर्वत्र होना ही तत्व है) से भी प्रमाणित है। भागवत (01/02/11) में कहा जाता है “वदन्ति तत्त्वविदस्तत्त्वं यज्ञज्ञानमद्वयम्। ब्रम्होति परमात्मेति भगवानिति शब्दयते”। के द्वारा भगवान (नाम) का ही सार्वत्रिक एवं सार्वकालिक बोध कराया गया है। किसी कवि की प्रख्यात उक्ति है “जो तू चाहे एक को, तो एक एक में देख में भी एको ब्रम्ह द्वितीया नास्ति” (अर्थात् एक ब्रम्ह ही सर्वत्र है, दूसरा कोई नहीं है) का ही भाव निहित है। तत्वपरिजात में भी कहा गया है।

तत्त्वेकं तु परब्रम्हा द्वितीया नास्ति लौकिकम्।

शक्तिशक्तिमनोरभेदः (अर्थात् शक्ति और शक्तिमान अथवा नाम और नामी में कोई भेद नहीं होता है) के अनुसार भगवान और भगवन्नाम में कोई भेद नहीं है। अतएव यहाँ सर्वत्र भगवान शब्द से भगवन्नाम ही अभिहित है। भगवान का ब्रम्हा या ब्रम्ह नाम बृहि वर्धने धातु से विष्णु नाम विप्लु व्याप्ती धु से नारायण नाम नृ गती धातु से तथा जगन्निवास या वासुदेव नाम वसु आच्छादने धातु से निष्पन्न होने के कारण सर्वत्र व्यापकता का ही भाव संक्षिप्त हो रहा है। ईशावास्योपनिषद में कहा गया है—

“ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्”

(अर्थात् यह चराचर सम्पूर्ण जगत् ईश्वर से आच्छादित है) इस औपनिषदिक सदुक्ति में भी सर्वत्र ईश्वर्युक्ति का भाव अनुस्यूत है।

अतएव निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि संसार में अनन्त या असंख्य वस्तुएं हैं। इन सबमें नामान्यन्तस्य तथा स सर्वनामः स च विश्वरूपः के अनुसार अनन्तनामा भगवान के अनन्त एवं असीम नाम ही तत्वात्मक (सारभूत) होने के कारण स्मरणीय एवं मननीय है। जैसा कि कहा गया है :—

संसारे सन्ति भूर्यासि वस्तूनि च नामानि च।
तेद्यु तत्त्वं परं प्रोक्तं नारायणः श्रुतं नाम ॥

भगवन्नाम की इसी तत्वात्मक प्रतिष्ठा को लक्ष्य कर महर्षि व्यास जी ने भागवत में 1/2/10.11, 2/8/2, 3/21/32, 4/7/27, 5/12/4, 7/2/61, 7/15/22, 11/17/7 तथा 11/18/34 में तत्व शब्दों के उल्लेख द्वारा उपर्युक्त भाव की सम्पुष्टि की है। इस प्रकार भगवन्नाम की तत्वात्मक प्रतिष्ठ सहज सिद्ध है।

5. भगवन्नाम की आधारमूलकता—

यह सम्पूर्ण संसार आधाराधेय भाव पर ही आधारित है। संसार में विविधता है, परन्तु सूक्ष्म निरीक्षण (अथवा, तात्विक दृष्टि से विश्लेषण) करने पर बाह्य अनेकता में भी आन्तरिक एकता की सिद्धि होती है। यह एकता एकस्य (ब्रह्मणो) भावः (अर्थात् एक ब्रम्ह या भगवान का भाव ही एकता है) इस जगत् की मौलिक विशेषता है। ऋग्वेद में कहा गया है—

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।”

(अर्थात् तीन पैर या भाग उस विराट पुरुष के ऊपर चले गये केवल एक पैर या चौथाई भाग ही यहाँ इस संसार में रह गया है। इस मंत्रार्थ में उस अनन्त पुरुष के एक भाग या अंश का इस संसार में रह जाना, उसकी सर्वत्र एकात्मिकी का ही संकेत करती है। उन्हीं एक (उस विश्वरूप परमात्मा) का भाव एकता है जो सारे संसार का आधार है। भगवन्नामात्मक परमतत्व इस संसार का आधार है और संसार इस परमतत्व का आधेय। कहा भी गया है—

अस्ति नाम्नो महत्त्वं परं भूतले
सच्चिदानन्दरूपं च यत् विभुतम्।
माति चाधारभूतं जगत्कारण
तन्मयं चैव सर्वं जगद् रोचते ॥

स्वामी राघवाचार्य जी का यह कथन सर्वथा संगत है—

“शरीर के सारे अंग जिस प्रकार एक शरीर आत्मा के अपृथक सिद्ध विशेषण प्रतीत होते हैं, उसी प्रकार जगत् के समस्त पदार्थ जड़ चेतनरूप सारे नामरूप एक परमतत्व के अपृथकसिद्ध विशेषण हैं। शरीर को शरीरी से अलग नहीं किया जा सकता। शरीर की सत्ता का आधार शरीरी ही होता है। इसी प्रकार परमतत्व इस जगत् का आधार है और जगत् परमतत्व का आधेय।

सन्दर्भ

1. आनन्दरामायण सारकाण्ड 1/1
2. विष्णुपुराण 6/7/74
3. विष्णुपुराण 6/7/74
4. तत्वपरिजात 3/13



डॉ. पुष्पा देवी

असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, मनुलाल महाविद्यालय, औरैया उ.प्र.

Publish Research Article

International Level Multidisciplinary Research Journal

For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- * International Scientific Journal Consortium
- * OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org